3

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...
हरषि हरषि बहु गरजि गरजि के, मिथ्या तपन हरी।।टेक।।
परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...
सरधा भूमि सुहावनि लागे, संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी।।१।।
परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...
स्याद्वाद नय बिजली चमके, परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के, हृदय सुभक्ति भरी।।२।।
परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...
जप तप परमानन्द बढ़्यो है सुखमय नींव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी।।३।।
परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

बारिश के मौसम में जंगल में आत्मध्यान में लीन वीतरागी दिगम्बर मुनिराज के स्वरुप से मानो ज्ञान की धारा प्रवाहित हो रही है। ऐसा लग रहा हैं कि मुनिराज अपने स्वरुप में लीन होकर अत्यंत आनंद का अनुभव कर रहे है जिससे मिथ्यात्व रुपी तपन का नाश हो रहा हैं।।टेक।।

हे जीव! ऐसा प्रतीत हो रहा हैं कि सम्यक दर्शन रुपी भूमि अत्यंत मनोहारी हैं, जिसने सशंय रुपी मिथ्यात्व की बेल का नाश कर दिया है तथा मुनिराज की मगंल वाणी से निकली भेदविज्ञान रुपी वायु से भव्य जीवों के सरोवर रुपी मन में आनंद उमड़ रहा हैं।।१।।

हे भव्य! मुनिराज की वाणी में आये स्याद्वादरुपी बिजली की चमक से मानो मिथ्यामत पर्वत से गिरकर नष्ट हो गया हैं और जिस प्रकार वर्षा ऋतु के आ जाने से मयुर आदि जीव प्रसन्नता से नृत्य करने लगते हैं, उसी प्रकार वीतरागी दिगम्बर सन्तों को देखकर भव्य जीवों के चित्त में अगाध भक्ति भर जाती हैं।।२।।

मुनिराज की आत्म स्थिरता और तप से उनका आत्मिक आनंद बढ़ गया है और यह आनंद ही सुखमय नींव के समान लग रहा है। कवि द्यानतरायजी कहते हैं, कि सावन के माह में आनंदरुपी बारिश हो रही है और यह आनंद ही आत्मस्थिरता का शाश्वत कारण है।।३।।